International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-3 May-June- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

# स्मृति—धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के रचनाकार

**डॉ. दिलीप कुमार नाथाणी**
सहायक आचार्य संस्कृत
श्री पारसमल बोहरा नेत्रहीन महाविद्यालय,
चोखा, जोधपुर, राजस्थान

**धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः** मनु का यह वाक्य स्पष्ट व्यक्त करता है कि जितने भी धर्मशास्त्र हैं वे सभी स्मृतियाँ हैं। इन धर्मशास्त्रों के रचनाकारों के सन्दर्भ हमें पराशर स्मृति में विवरण प्राप्त होता है—

**कल्पे कल्पे क्षयोत्पत्त्या ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। श्रुतिस्मृतिसमाचारनिर्णेतारश्च सर्वदा।।**[1]

स्मृतिमुक्ताफल के रचयिता ने इस पर टिप्पणी लिखी है—**क्षयसहिता उत्पत्तिः क्षयोत्पत्तिः। तयोपलक्षिता भवंति कल्पे कल्पे महाकल्पे अवांतरकल्पेच। ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा महाकल्पावसाने क्षीयंते महाकल्पादावुत्पद्यंते। एवमवांतरकल्पानामवसाने प्रारंभे च स्मृत्यादीनां निर्णेतारो मन्वादयः क्षयोत्पत्तिभ्यामुपलक्ष्यंते। चकारेणानुक्तो धर्मः समुच्चीयते। सर्वदेत्यनेन सृष्टिसंहारप्रवाहस्यानादित्वमनंतत्वं च दर्शितम्।**[2] श्लोक के अनुसार प्रत्येक महाकल्पादिके समापन एवंपुनः प्रारम्भ होने के समय ब्रह्मा, विष्णु व शिव का लयोत्पत्ति होती है इसी प्रकार श्रुति व स्मृति के निर्णायक कर्त्ता भी उत्पन्न एवं लय होते हैं। पुनः अगले श्लोक में पराशर मुनि कहते हैं—

**न कश्चिद्वेदकर्त्ता च वेदं श्रुत्वा चतुर्मुखः। तथैव धर्मान् स्मरति मनुः कल्पांतरे तथा।।**

इसकी टीका करते हुये स्मृतिमुक्ताफल के रचनाकार कहते हैं—**कल्पांतरे धर्मान् स्मरति इति पदत्रयं पूर्वर्धेऽपि संबध्यते। महाकल्पे चतुर्मुखः परमेश्वरेण दत्तं वेदं श्रुत्वा तत्र विप्रकीर्णान्वर्णारमादिधर्मान्स्मृतिग्रंथरूपेण उपनिबध्नाति तथैव स्वायुभुवो मनुः प्रत्यवांतरकल्पं वेदोक्तधर्मान्ग्रथ्नाति। मनुग्रहणेनात्रिविष्ण्वादय उपलक्ष्यंते।**[3] इसमें जो कल्पान्तरे धर्मान् स्मरति यह पूर्व के वाक्य से जुडता है कि प्रत्येक कल्प के प्रारम्भ में धर्मों का स्मरण किया जाता है जो कि स्मृति के रूप में विद्यमान है। प्रत्येक महाकल्प के प्रारम्भ में परमेश्वर के द्वारा प्रदत्त वेद को चतुर्मुख सुनते हैं तथा उसी धर्म को जो वर्णाश्रमादि धर्मों को प्रसरित करता है उसे स्मृतिग्रन्थ के रूप में निबद्ध किया जाता है उसी प्रकार मनु प्रत्यवांतर कल्प में वेदोक्तधर्म को ग्रन्थ के रूप में स्थापित करते हैं। यहाँ मनु से तात्पर्य मन एवं अन्य सभी धर्मशास्त्र के प्रयोजक यानि कर्त्ता। इसमें स्पष्ट है कि ये सारे धर्मशास्त्र वेदों में वर्णित धर्म को ही उपस्थि करते हैं। इसीलिये धर्मशास्त्रकारों को याज्ञवल्क्य ने लिखा—

**याज्ञवल्क्य—**

**मन्वत्रिविणुहारीतयाज्ञवल्क्योशनांऽगिराः। यमापस्तम्बसंवर्त्ताः कात्यायनबृहस्पती।।**

---

[1] पराशर स्मृति १.२०

[2] स्मृतिमुक्ताफलम्, स्मृतिकर्त्तार, पृ.—८,याज्ञवल्क्य स्मृति आचाराध्याय श्लोक, ४.५,

[3] स्मृतिमुक्ताफलम्, स्मृतिकर्त्तार, पृ.—८

**पाराशर्यव्यासशंखलिखितौ दक्षगौतमौ। शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः।।**[४]

मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अंगिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त्त, कात्यायन, बृहस्पति, पाराशर, व्यास, शंख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप, वसिष्ठ, ये धर्मशास्त्र के प्रयोजक या निर्माता थे। इसमें जब याज्ञवल्क्य ने इसमें पाराशर व व्याय का नामोल्लेख किया है तो यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि इन धर्मशास्त्रकारें में पौर्वापर्य नहीं है। जैसे ही मनु ने धर्म के स्वरूप को प्रकट किया वैसे ही इन धर्मशास्त्रकारें ने भी अपने अपने दृष्टिकोण से उसको विवेचित किया। इसीलिये कलियुग के धर्मशास्त्रकार होने पर भी पराशर का उल्लेख याज्ञवल्क्य कर रहे हैं। इसी प्रकार पराशर स्मृति में व्यास ने भी धर्मशास्त्रकारें को उल्लेखित किया है एवं अपने पिता के समक्ष यह कहा है कि मैंने उन सभी धर्मशास्कारें को पढ़ा है—

**धर्मकथयमे तातानुग्राह्यो ह्यहं तव। श्रुता में मानवा धर्मो वासिष्ठा काश्यपास्तथा।।**

**गर्गेया गौतमीयाश्च तथाञ्चोशनसास्मृताः अत्रेर्विष्णोश्च संवर्तात्दक्षादंगिरसस्तथा।**

**शातातपाच्च हारीताद्याज्ञवल्क्यात्तथैव च। आपस्तम्बकृता धर्मा शंखस्य लिखितस्य च।**

**कात्यायनकृताश्चैव तथा प्राचेतसन्मुनेः। श्रुता ह्येते भवत्प्रोक्ताः श्रुत्यर्थ में न विस्मृता।।**[५]

अर्थात् व्यास अपने पिता से कह रहे हैं कि मैं आपसे पुनः धर्म सम्बन्धी विषयों को सुनना चाहता हूँ जबकि मैंने मनु, वसिष्ठ, कश्यप, गर्ग, गौतम, उशना, अत्रि, विष्णु, संवर्त, अंगिरस, शातातप, हारीत, याज्ञवल्क्य, आपस्तम्ब, शंख, लिखित, कात्यायन, प्रचेता व आपके द्वारा वर्णित धर्म को सुना है। स्मृतिरत्न में धर्मशास्त्रकारें को उल्लेखित किया है—

**मनुर्बृहस्पतिर्दक्षो गौतमोऽथ यमोंऽगिराः। योगीश्वरः प्रचेताश्च शातातपपराशरौ।**

**संवर्त्तोशनसौ शंखलिखितावत्रिरेव च। विष्ण्वापस्तंबहारीता धर्मशास्त्रप्रवर्तकाः।**[६]

मनु, बृहस्पति, दक्ष, गौतम, यम, अंगिरा, योगीश्वर याज्ञवल्क्य, प्रचेता, शातातप, पराशर, संवर्त्त, औशनस, शंख, लिखित, अत्रि, विष्णु, आपस्तम्ब, हारीत, ये सब धर्मशास्त्रों के प्रवर्तक हैं। अंगिरा स्मृति में भी धर्मशास्त्रकारों को लिखा है, परन्तु अंगिरा ने जिनका नामोल्लेख किया है उन्हें उपस्मृतिकार कहा है—

**जाबालिर्नाचिकेतश्च स्कंदो लोगाक्षिकाश्यपौ। व्यासः सनत्कुमारश्च शंतनुर्जनकस्तथा।**

**व्याघ्रः कात्यायनश्चैव जातुकर्णिः कपिंजलः। बोधायनश्च काणादो विश्वामित्रस्तथैव च।**

**पैठीनसीर्गोभिलश्चेत्युपस्मृतिविधायकाः।**[७]

---

[4] याज्ञवल्क्य स्मृति आचाराध्याय श्लोक, ४.५, स्मृतिमुक्ताफलम्, स्मृतिकर्त्तार, पृ.—८

[5] पराशर स्मृति, १.१२—१५

[6] स्मृतिमुक्ताफलम्, स्मृतिकर्त्तार, पृ.—८

[7] अंगिरा स्मृति, स्मृतिमुक्ताफल, पृ. ८

जाबालि, नचिकेता, स्कंदो, लोगाक्षि, कश्यप, व्यास:, सनत्कुमार, शंतनु, जनक, व्याघ्र, कात्यायन, जातुकर्णि, कपिंजल, बोधायन, कणाद, विश्वामित्र, पैठीनसि, गोभिल। ये सभी उपस्मृतिकार हैं। शंख ने भी धर्मशास्त्रकारों का नामोल्लेख किया है—**मनुयमदक्षविष्णवंगिरोबृहस्पत्युशनापस्तंबगौतमसंवर्तत्रियहारीतकात्यायनशं— लिखितपराशरव्यासशातातपप्रचेतोयाज्ञवल्क्यादय:।**[8] तथा शंखलिखित स्मृति में भी इस प्रकार वर्णन आया है—**स्मृतिर्धर्मशास्त्राणि तेषां प्रणेतारो मनुविष्णुयमदक्षांगिरोऽत्रिबृहस्पत्युशन आपस्तम्ब वसिष्ठाकात्यायन पराशर व्यास शंखलिखित संवर्त्त गौतम शातातपहारीत याज्ञवल्क्य प्राचेतयादयं: प्रचेता एव प्राचेतस:। आदि शब्देन कल्पतरौ बुध देवल सोमजमदग्नि विश्वामित्र प्रजापति नारद पैठीनसि पितामह बौधायनच्छागलेय जाबाल च्यवन मरीचि कश्यपा उक्ता: एवं च।**[9] **यहाँ** इसमें समझाते हुये कहा है कि जो सभी के नामोल्लेख के उपरान्त आदि शब्द का प्रयोग आया है उसका तात्पर्य है कल्पतरु, बुध, देवल, सोम, जमदग्नि, विश्वामित्र, प्रजापति, नारद, पैठीनसि, पितामह, बौधायन, छागलेय, जाबाल, च्यवन, मरीचि, कश्यप इनका नाम समझना चाहिये। स्मृति संग्रह में लेखक ने स्मृतिकारों का विवरण इस प्रकार दिया है—

**वसिष्ठो नारदश्चैव सुमंतुश्च पितामह:। बभ्रु: काष्णाजिनि: सत्यव्रतो गार्ग्यश्च देवल:।**

**जमदग्निर्भरद्वाज: पुलस्त्य: पुलह: क्रतु:। आत्रेयाश्छागलेयश्च मरीचिर्मत्स्य एवं च।**

**पारस्करो ऋष्यशृंगो वैजावापस्तथैव च। इत्येते स्मृत्तिकर्त्तार एकविंशतिरीरिता:।।**[10]

वसिष्ठ, नारद, सुमंतु, पितामह, बभ्रु, काष्णाजिनि, सत्यव्रतो, गार्ग्य, देवल, जमदग्नि, भरद्वाज, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अत्रि, छागलेय, मरीचि, मत्स्य, पारस्कर, ऋष्यशृंग, वैजवाप, ये सभी २१ स्मृतिकर्त्ता हैं। संगह में कहा है कि जो अस्सी हजार मुनि वे सभी गृहमेधि यानि कि गृह्यसूत्रानुसार अपने गृहस्थ जीवन को जीने वाले हैं वे वास्तव में धर्मप्रवर्तकों के बीजभूत हैं तथा इनके द्वारा जो पूर्व धर्मशास्त्रों को प्रणयन किया गया वे ही प्रमाण हैं एवं उन्हें किसी भी कारण से अप्रमाण नहीं मानना चाहिये।

**अष्टाशीतिसहस्राणि मुनयो गृहमेधिन:। पुनरावर्तिनों बीजभूत धर्मप्रवर्त्तका:।।**

**एतैयानि प्रणीतानि धर्मशास्त्राणि वै पुरा। तान्येतानि प्रमाणानि न हन्तव्यानि हेतुभि:।।**

इस पर टीका करते हुये स्मृतिमुक्ताफल में लिखा है— **यस्तानि हेतुभिर्हन्यात्सोंऽधे तमसि मज्जति। अग्निवेश्य बोधायनमापस्तंबं सत्याषाढं द्राह्यायणमागत्यं शाकल्यमाश्वलायनं शांभवीयं कात्यायनमिति नवानि पूर्वसूत्राणि। वैखानसं शौनकीयं भारद्वाजमाग्निवेश्यं जैमिनीय माधुर्यं माध्यंदिनं कौंडिन्यं कौषीतकमिति नवान्यपरसूत्राण्यष्टादशसंख्यका: शारीरा: संस्कारा:। बोधायन, आ**पस्तम्ब, सत्याषाढ़, द्राह्यायण, अगस्त्य, शाकल्य, आश्वलायन, शांभवीय, कात्यायन ये नौ पूर्व के सूत्र कहे गये

[8] स्मृतिमुक्ताफल, पृ. ८, शंखस्मृति

[9] वीरमित्रोदय , परिभाषाप्रकाश:, प्रथम खण्ड पृ.संख्या १६—चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी ,१९८७

[10] स्मृतिमुक्ताफल, पृ. ८

हैं। एवं वैशानस, शौनकीय, भारद्वाज, अग्निवैश्य, जैमिनी, माधुर्य, माध्यंदिन, कौंडिन्य, कौषीतक ये नौ अपर सूत्र कहे गये है। इस प्रकार कुल १८ शरीर के संस्कार हैं।[११]

ये सब पौरुषेय हैं। इनमें भी स्मृति नाम से अभिहित ग्रन्थों की संख्या ३६ है जैसा कि वीरमित्रोदयकार ने शंखलिखित स्मृति के आधार पर कहा है—

**मन्वादिस्मृतयो यास्तु षट्त्रिंशत्परिकीर्त्तिताः।**

**इत्यत्र एताः षट्त्रिंशद्बोध्याः। अविगानेन सर्वपरिग्रहादिति कल्पतरुः। योगियाज्ञवल्क्यवृद्धमनुवृद्धशातातप वृद्धवसिष्ठ लघुहारीत स्मरणानि षट्त्रिंशत्स्मृतिकारकर्तृकाण्येव अवस्थाभेदेन तैरेव करणात्। अत एव याज्ञवल्क्येनोक्तं योगशस्त्रं च मत्प्रोक्तमिति।**[१२]

यहाँ वीरमित्रोदयकार कह रहे हैं कि मनु आदि द्वारा रचित स्मृति नामक ग्रन्थ कुल ३६ हैं। ऐसे में जो स्मृतियाँ योगियाज्ञवल्क्य, वृद्धहारित, वृद्धमनु, वृद्धशातातप, वृद्धवसिष्ठ, लघुहारीत आदि के नामो से उल्लिखित हैं वस्तुतः वे मनु, याज्ञवल्क्य आदि द्वारा ही रचित हैं। योगियाज्ञवल्क्य, वृद्ध हारीत, वृद्ध मनु आदि नामक ग्रन्थ में स्मृतियों के सन्दर्भ में इस प्रकार दिया गया है—**स्नानमब्दैवतैर्मन्त्रैर्यत्त्वयोक्तं पुराऽनघ। इति योगियाज्ञवल्क्यं प्रति ऋषिप्रश्ने याज्ञवल्क्यग्रन्थोक्तस्नानानुवाच्च। एवं वृद्धमन्वादीनामपि मन्वाद्यभेदः शिष्टप्रसिद्ध्यादिभिरव गन्तव्यः। यानि तु गृह्यतत्परिशिष्टादीनि तानिभिन्नकोटीन्येव पुराणवत्प्रमाणानि।**[१३] इस प्रकार योगियाज्ञवल्क्य के अनुसार वृद्ध मनु व मनु में थोड़ा भेद दिखाई भी दे तो वह ये सिद्ध नही करता कि ये मनु और वृद्धमनु भिन्न भिन्न हैं। गृह्यपरिशिष्ट आदि भी पुराणों की भाँति प्रमाण रूप में मान्य हैं। यहाँ धर्मशास्त्रों को स्मृति कहा है इसीलिये वीरमित्रोदयकार ने विष्णुधर्मोत्तर, महाभारत, रामायणादि इन सभी के लिये जय संज्ञा कही है, इसके प्रमाण में दिया है—

**तथा विष्णुधर्मोत्तरमहाभारतरामायणादीन्यपि**

**अष्टादशपुराणेषु यानि वाक्यानि भारत। तान्यालोच्य महाबाहो तथा स्मृत्यन्तरेषु च।।**

**मन्वादिस्मृतयो याश्च षट्त्रिंशत्परिकीर्त्तिताः। तासां वाक्यानि क्रमशः समालोच्य ब्रवीमि ते।।**

**इति भविष्यपुराणे षट्त्रिंशत्स्मृतिभिन्नस्मृत्यन्तराभिधानात्।**

**अष्टादशपुराणानि रामस्य चरितं तथा। विष्णुधर्मादिशास्त्राणि शिवधर्माश्च भारत।।**

**कार्ष्णं च पञ्चमं वेदं यन्महाभारतं स्मृतम्। सौराश्च धर्मा राजेन्द्रमानवोक्ता महीपते।।**

---

11 स्मृतिमुक्ताफल, पृ. ९

12 वीरमित्रोदय , परिभाषाप्रकाशः, प्रथम खण्ड पृ.संख्या १६—चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी ,१९८७

13 वही

**जयेति नाम एतेषां प्रवदन्ति मनीषिण:। इति विशिष्य रामचरितादेस्तत्रैवाभिधानाच्च।।**[१४]

इन सभी ग्रन्थों को जय नाम से इसीलिये अभिहित किया जाता है क्योंकि ये धर्म में सर्वश्रेष्ठ प्रमाण हैं। शब्द में प्रमाण होने से इनमें उत्कृष्टता है। पुन: भविष्य पुराण में इसी तथ्य को समझाया गया है—

**श्राद्धशूलपाणौ भविष्यपुराणे**

**चतुर्णामपि वर्णानां यानि प्रोक्तानि श्रेयसे। धर्मशास्त्राणि राजेन्द्र शृणु तानि नृपोत्तम।।**

**अष्टादशपुराणानि चरितं राघवस्य च। रामस्य कुरुशार्दुल धर्मकामार्थसिद्धये।।**

**तथोक्तं भारतं वीर पाराशर्येण धीमता वेदार्थं। सकलं योज्य धर्मशास्त्राणि च प्रभो।।**[१५]

भविष्यपुराण में भी इन्हें धर्मप्रमाण में साधन माना है। तथा इनके इसी महत्त्व के कारण इसे जय कहा जाता था। वीरमित्रोदयकार ने इसकी व्याख्या में लिखा है:— **यदपि स्मर्तृनाम अनिर्दिश्य अत्र समृतिरत्र श्लोक:। इत्यादि प्रामाणिकलिखनं तदप्पविगीतमहाजनपरिगृहीतत्वेन प्रमाणं स्मृत्यन्तरेषु चेत्यनेनैव संगृहीतं वेदितव्यम्। षट्त्रिंशन्मतादिकं तु कैश्चिदेव परिगृहीतत्वाद्विगीततवादप्रमाणमित्युक्तं कल्पतरूणा। विज्ञानेश्वरापरार्कशूलपाणिप्रभृतिभिस्तु प्रमाणत्वेन परिगृहीतम्। युक्तं चैतत्। यत: अन्येऽपि स्मृतिकर्त्तार: प्रयोगपारिजातादौ गण्यन्ते।**[१६]

मनु आदि ३६ स्मृतियों के अलावा भी कई अन्य स्मृति नाम से ग्रन्थ लिखे गये। उनके नाम प्रयोगपारिजात में दिये गये हैं। प्रयोगपारिजात ने मन्वादि प्रधान ३६ स्मृतियों के अलावा अन्य स्मृतियों के नामो का उल्लेख करते हुये लिखा है—

**मनुर्बृहस्पतिर्दक्षो गौतमोऽथ यमोऽंगिरा:। योगीश्वरा: प्रचेताश्च शातातपपराशरौ।।**

**संवर्त्तोशनसौ शंखलिखितावत्रिरेव च। विष्णवापस्तम्बहारीता धर्मशास्त्रप्रवर्तका:।।**

**एते ह्यष्टदाश प्रोक्ता मुनयो नियतव्रता:। जाबालिर्नाचिकेतश्चस्कन्दो लौगाक्षिकाश्यपौ।।**

**व्यास: सनत्कुमारश्च शन्तनुर्जनकस्तथां व्याघ्र: कात्यायनश्चैव जातूकर्ण्य: कपिञ्जल:।।**

**बौधायनश्च काणादो विश्वामित्रस्तथैव च। पैठीनसिर्गोभिलश्चेत्युपस्मृतिविधायका:।।**

**वसिष्ठो नारदश्चैव सुमन्तुश्च पितामह:। विष्णु:काष्णाजिनि: सत्यव्रतो गार्ग्यश्च देवल:। जमदग्निर्भरद्वाज: पुलस्त्य: पुलह:क्रतु:।।**

14. वीरमित्रोदय , परिभाषाप्रकाश:, प्रथम खण्ड पृ.संख्या १७—चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी ,१९८७
15- वीरमित्रोदय , परिभाषाप्रकाश:, प्रथम खण्ड पृ.संख्या १७—चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी ,१९८७

16. वीरमित्रोदय , परिभाषाप्रकाश:, प्रथम खण्ड पृ.संख्या १८—चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी ,१९८७

**आत्रेयश्च गवेश्च मरीचिर्वत्स एवच। पारस्करश्चर्ष्यशृंगो वैजावापस्तथेवच।।**

**इत्येते स्मृतिकर्त्तार एकविंशतिरीरिताः। एतैर्यानि प्रणीतानि धर्मशास्त्राणि वैपुरा।। इति।**[१७]

मनु, बृहस्पति, दक्ष, गौतम, यम, अंगिरा, योमीश्वर, प्रचेता, शातापत, पराशर, संवर्त, औशनस, शंख, लिखित, अत्रि, विष्णु, आपस्तम्ब, हारीत, धर्मशास्त्रप्रवर्तक जो कि मुनिव्रत धारण किये हुये अट्ठारह धर्मशास्त्रकार हैं। जाबालि, नचिकेता, स्कन्द, लौगाक्षि, कश्यप, व्यास, सनत्कुमार, शन्तनु, जनक, व्याघ्र, कात्यायन, जातूकर्ण्य, कपिञ्जल, बौधायन, कणद, विश्वामित्र, पैठीनसि, गोभिल, ये उपस्मृतिकार हैं। वसिष्ठो, नारद, सुमन्तु, पितामह, विष्णु, काष्णाजिनि, सत्यव्रत, गार्ग्य, देवल, जमदग्नि, भरद्वाज, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अत्रि, गवेय, मरीचि, वत्स, पारस्कर, ऋष्यशृंग, वैजावाप, ये २१ स्मृतिकर्त्ता हैं। इस प्रकार प्रयोगपारिजात में स्मृति कर्त्ता तथा उपस्मृतिकर्त्ताओं का नामोल्लेख हमें प्राप्त होता है मदनरत्न नामक निबन्ध ग्रन्थ में भी इन्हें उपस्मृतिकर्त्ता ही कहा है। याज्ञिक देवण्ण भट्ट ने स्मृतिचन्द्रिका में प्रमाण साधन के अन्तर्गत लिखा है कि –

**मन्वादिप्रणीतानामेव धर्मशास्त्राणां वेदमूलत्वादेव तान्येव धर्मे प्रमाणानिति तदधिगमोपयोगितया तच्छास्त्रप्रणेतारः प्रथमं प्रदर्श्यन्ते। तत्र पैठीनसिः–**

**तेषां मन्वंगिरोव्यासगौतमात्र्युशनोयमाः। वसिष्ठदक्षसंवर्तशातातपपराशराः।।**

**विष्ण्वापस्तम्बहारीताः शंखः कात्यायनो गुरुः। प्रचेता नारदो योगी बोधायनपितामहौ।।**

**सुमन्तु कश्यपो बभ्रुः पैठीनो व्याघ्र एव च। सत्यव्रतो भरद्वाजो गार्ग्यः काष्णाजिनिस्तथा।।**

**जाबालिर्जमदग्निश्च लोगाक्षिर्ब्रह्मसम्भवः। इति धर्मप्रणेतारः षट्त्रिंशदृषयस्स्मृताः।।**[१८]

इस प्रकार पैठीनसी स्मृति के अनुसार ३६ स्मृतिकारों के नामोल्लेख प्राप्त होता है तो प्रश्न होता है कि क्या मरीचि, देवल, पारस्कर आदि को हम धर्मशास्त्रकार नहीं मानेंगे क्या? इस पर याज्ञिक देवण्ण भट्ट लिखते हैं– **ननु किमियं परिसंख्या? मेवम्, तथा सति वत्समरीचिदेवलपारस्करपुलस्त्यपुलहक्रतुऋष्यशृंगलिखितच्छागलेयादीनां धर्मशास्त्रप्रणेतृत्वं न स्यात्। न च तथाऽस्त्विति वाच्यम्, तेषामपि वेदमूलस्मृतिशास्त्रप्रणेतृत्वेन मन्वादिभ्योऽविशेषात्। अत एव शंख–"मनुयमदक्षविष्ण्वंगिरोबृहस्पत्युशन–आपस्तम्बगौतमसंवर्तत्रियहारीतकात्यायनशंखलिखितपराशरव्यासशातातपप्रचेतोयाज्ञवल्क्यादयः।।" इत्यादि ग्रहणं कृतवान्। अतः प्रदर्शनार्थमेव परिगणनं न्यायम्। अत्रांगिराः–**

**जाबालिर्नाचिकेतश्च स्कन्दो लोगाक्षिकाश्यपौ।**

**व्यासस्सनत्कुमारश्च शन्तनुर्जनकस्तथा।।**

**व्याघ्रः कात्यायनश्चैव जातूकर्णः कपिञ्जलः।**

**बोधायनः कणादश्च विश्वामित्रस्तथैव च।।**

17. वीरमित्रोदय , परिभाषाप्रकाशः, प्रथम खण्ड पृ.संख्या १६–चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी ,१९८७
18. स्मृतिचन्द्रिका, देवण्णभट्ट, भाग–१ पृष्ठ संख्या १

**उपस्मृतय इत्येता: प्रवदन्ति मनीषिण:।।**[19]

सरस्वती विलास के व्यवहाराध्याय में भी धर्मशास्त्रकारों के नामोल्लेख प्राप्त होते हैं एवं उन्हें स्मृतिकार कहते हुये उपस्मृतियों को भी उल्लिखित किया है—**मन्वंगिरोव्यासगौतमात्रेययमवसिष्ठदक्षसंवर्तशातातपपराशरविष्ण्वापस्तम्बहारीतशंखकात्यायनगुरुप्रचेतो नारदयोगीश्वरबोधायनपितमहसुमन्तुकश्यपबभ्रुपैठीनसि व्याघ्रपादसत्यव्रभरद्वाज गार्ग्यकाष्णाजिनिजाबालि जमदनिलौगाक्षिवत्समरीचिदेवलपारस्करलिखितछागलेयात्रिभि: प्रणीता: स्मृतय:।। जाबाल नाचिकेत स्कन्दलौगाक्षिकश्यपव्याससनत्कुमारशंतुनजनकव्याघ्रकात्यायनजातूकर्णि— कपिञ्जलबोधायनकणादविश्वामित्र (पैठीनसिगोभिल)प्रणीता उपस्मृतय:। जाबालिलौगाक्षिव्यासादय: पूर्वोक्ता नभवन्ति।।**[20] इस प्रकार कुल ६८ स्मृतिकार एवं उपस्मृतिकारों का नामोल्लेख यहाँ प्राप्त होता है। सरस्वती विलास में स्पष्ट रूप से स्मृति व उपस्मृति का विभाजन दिखाई देता है। याज्ञवल्क्य स्मृति ने भी धर्मशास्त्रकारों को गिनाया है—

**मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्ययोशनोंऽगिरा:। यमापस्तंसंवर्ता: कात्यायनबृहस्पति।।**

**पराशरव्यासशंखलिखिता दक्षगौतमो। शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजका:।।**[21]

स्मृतिरत्नग्रन्थ में कहा है—

**मनुर्बृहस्पतिर्दक्षो गौतमोऽथ यमोंऽगरा:। योगीश्वर: प्रचेताश्च शातातपपराशरौ।**

**संवर्त्तोशनसौ शंखलिखितावत्रिरेवच। विष्णवापस्तंबहारीता धर्मशास्त्रप्रवर्तका:।।**

**एते ह्यष्टादश प्रोक्ता मुनयो नियतव्रता:।।**[22]

**अंगिरा: ने** जिन का नामोल्लेख किया वे किंचित् भिन्न हैं—

**जाबालिर्नाचिकेतश्च स्कंदो लोकाक्षिकाश्यपौ। व्यास: सनत्कुमारश्च शंतनुर्जनकस्तथा।।**

**व्याघ्र: कात्यायनश्चैव जातुकर्णि: कपिंजल:। बोधायनश्च काणादो विश्वामित्रस्तथैव च।।**

**पैठीनसिर्गोभिलश्चेत्युपस्मृतिविधायका:।।**

**तथा**

**वसिष्ठो नारदश्चैव सुमंतुश्च पितामह:। बभ्रु: कार्ष्णाजिनि: सत्यव्रतो गार्ग्यश्च देवल:।।**

19. स्मृतिचन्द्रिका, देवण्णभट्ट, भाग—१, पृष्ठसंख्या,२
20 सरस्वतीविलास, व्यवहारकाण्ड, पृ. १५, श्रीप्रतापरुद्रमहादेवमहाराजविरचत, मैसूर राजकीय शाखा प्रेस—१९२७
21 याज्ञवल्क्य स्मृति, प्रथमोऽध्याय
22 स्मृतिरत्न,

**जमदग्निर्भरद्वाजः पुलस्क्यः पुलहः क्रतुः। आत्रेयश्छागलेयश्च मरीचिर्मत्स्य एवं च।।**

**पारस्करो ऋष्यशृंगो वैजावापस्तथैव च। इत्येते स्मृतिकर्त्तार एकविंशतिरीरिताः।।**

स्मृतिसंग्रह में स्पष्ट किया है **कि अष्टाशीतिसहस्राणि मुनयो गृहमेधिनः। पुनरावर्तिनो बीजभूता धर्मप्रवर्तकाः।।** ये अस्सी हजार सनकादि मुनियों के द्वारा पुनः धर्म की स्थापना हुई वे ही धर्म के बीज स्वरूप हैं। पुनः इन्हीं अस्सी हजार धर्म प्रवर्तक ऋषियों के सन्दर्भ में कहा है—**एतैर्यानि प्रणीतानि धर्मशास्त्राणि वै पुरा। तान्येतानि प्रमाणानि न हन्तव्यानि हेतुभिः।। यस्तानि हेतुभिर्हन्यात्सोंऽधे तमसि मज्जति।** अर्थात् ये जो अस्सी हजार ऋषि हैं ये ही सभी धर्मशास्त्रों के प्रवर्तक हैं एवं इन्होंने जो लिखा है वह किसी भी कारण से नष्ट नहीं किया जाना चाहिये जो इनको नष्ट करता है वह अंधतमस में प्रवेश करेगा। अग्निवेश्य ने धर्मशास्त्रकर्त्ताओं को उल्लिखित करते हुये कहा—**बोधायनमापस्तंबं सत्याषाढं द्राह्यायणमागस्त्यं शाकल्यमाश्वलायनं शांभवीयं कात्यायमिति नवानि पूर्वसूत्राणि। वैखानसं शौनकीयं भारद्वाजमाग्निवेश्यं जैमिनीयं माधुर्यं माध्यंदिनं कौंडिन्यं कौषीतकमिति नवान्यपरसूत्राण्यष्टादशसंख्यकाः शारीराः संस्काराः। इति**

इस प्रकार लिखते हुये याज्ञिक देवण्णभट्ट ने समाधान किया है कि वत्स, मरीचि आदि भी धर्मशास्त्रकार हैं, तथा इसके लिये शंख स्मृति के एक सूत्र का प्रमाण रूप में दिया है। साथ अगिरा स्मृति में वर्णित उपस्मृतियों का भी उल्लेख करके बताया है कि इतने स्मृतिकार व उप स्मृतिकार रहे हैं। वर्तमान में अन्वेषण के आधार पर कुल १३५ स्मृतियों के नाम हमें प्राप्त हुये। कहीं कहीं पर उनके नाम के आगे स्मृति के स्थान पर धर्मशास्त्र उल्लिखित है वे इस प्रकार हैं। वर्तमान में उपलब्ध स्मृतियों की वर्णानक्रम से गणना हम इस प्रकार कर सकते हैं—

(१) अत्रिस्मृति (२) अरुणस्मृति (३) अगस्त्यस्मृति (४) आंगिरसस्मृति (पूर्वांगिरस, उत्तरांगिरस)(५) आत्रेयस्मृति (६) आस्तम्बस्मृति (७) आश्वलायनस्मृति (८) ईशानस्मृति (९) इन्द्रदत्तस्मृति (१०) उपकश्यपस्मृति (११) उपांगिरसस्मृति (१२) औपजंघनस्मृति (१३) औशनसस्मृति (१४) औशनस संहिता (१५) ऋतुपर्णस्मृति (१६) ऋष्यशृंग स्मृति (१७) कणादस्मृति (१८) कण्वस्मृति (१९) कपिञ्जलस्मृति (२०)कपिल स्मृति (२१) कण्वषस्मृति (२२) कश्यपस्मृति (२३) कवसस्मृति (२४) कात्यायनस्मृति (२५) काष्णाजिनस्मृति (२६) कुमारस्मृति (२७) कोकिलस्मृति (२८) कौत्सस्मृति (२९) कृतुस्मृति (३०) गर्गस्मृति (३१) गव्यस्मृति (३२) गोभिलस्मृति (३३) गौतम स्मृति (३४) चन्द्रस्मृति (३५) च्यवनस्मृति (३६) छागल्यस्मृति (३७) जमदग्निस्मृति (३८) जातुकर्ण्यस्मृति (३९) जाबालीस्मृति (४०) दक्षस्मृति (४१) दाल्भ्यस्मृति (४२) देवलस्मृति (४३) नाचिकेतस्मृति (४४) नारदस्मृति (४५) नारायणस्मृति (४६) पराशरस्मृति (४७) पारस्करस्मृति (४८) पितामहस्मृति (४९) पुलस्मृति (५०) पुलस्त्यस्मृति (५१) पैठीनसिस्मृति (५२) प्रजापतिस्मृति (५३) प्रह्लादस्मृति (५४) प्राचेतसस्मृति (५५) बादरायणस्मृति (५६) बाहस्पत्यस्मृति (५७) बुधस्मृति (५८) बृहत्पाराशरस्मृति (५९) बृहद्यमस्मृति (६०) बृहद्योगियाज्ञवल्क्यस्मृति (६१) बृहद्वसिष्ठ स्मृति (६२) बृहद्विष्णुस्मृति (६३) बृहस्पतिस्मृति (६४) बैजवापस्मृति (६५) बौधायनस्मृति (६६) ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्य स्मृति (६७) ब्राह्मणवधस्मृति (६८) भारद्वाजस्मृति (६९) भृगुस्मृति (७०) मनुस्मृति (७१) मरीचिस्मृति (७२) माण्डव्यस्मृति (७३) मार्कण्डेयस्मृति (७४) मुद्गलस्मृति (७५) मृत्युञ्जय स्मृति (७६) यमस्मृति (७७) याज्ञवल्क्यस्मृति (७८) लघुपाराशरस्मृति(७९) लघुबृहस्पतिस्मृति (८०) लघुव्यासस्मृति (८१) लघुशंखस्मृति (८२) लघुशातातपस्मृति (८३) लघुशौनकस्मृति (८४) लघ्वत्रिस्मृति (८५) लघ्वाश्वलायनस्मृति (८६) लघुयमस्मृति (८७) लघुहारितस्मृति (८८) लिखितस्मृति (८९) लोमशस्मृति (९०) लोहितस्मृति (९१) लौगाक्षिस्मृति (९२) वत्सस्मृति (९३) वभ्रूस्मृति (९४) वसिष्ठस्मृति (९५) वाधूलस्मृति (९६) वाराहीस्मृति

(संहिता) (९७) विश्वामित्रस्मृति (९८) विश्वेश्वरस्मृति (९९) विष्णुस्मृति (१००) वृद्धगौतम (१०१) वृद्धशातातपस्मृति (१०२) वृद्धहारीतस्मृति (१०३) वृद्धात्रिस्मृति (१०४) वैखानसस्मृति (१०५) वैजवापस्मृति (१०६) वैशम्पायनस्मृति (१०७) व्यवहारांगस्मृति (१०८) व्याघ्रस्मृति (१०९) व्यासस्मृति (११०) शकिलस्मृति (१११) शंखस्मृति (११२) शतक्रतुस्मृति (११३) शन्तनुस्मृति (११४) शंखलिखितस्मृति (११५) शाकलस्मृति (११६) शाकटायनस्मृति (११७) शातातपस्मृति (११८) शाट्यायनस्मृति (११९) शाण्डिल्यस्मृति (१२०) शुन:क्षेपस्मृति (१२१२) शुन:पुच्छस्मृति (१२२) शूद्रस्मृति (१२३) शौनकस्मृति (१२४) षण्मुखस्मृति (१२५) संवर्तस्मृति (१२६) सत्यव्रतस्मृति (१२७) सदाचारस्मृति (१२८) सप्तर्षिस्मृति (१२९) सनत्कुमारस्मृति (१३०) स्कन्दस्मृति (१३१) सांख्यायनस्मृति (१३२) सुमन्तस्मृति (१३३) सोमस्मृति (१३४) हारितस्मृति (१३५) होरिलस्मृति।

निष्कर्षत: हम देखते हैं कि स्मृतियों की संख्या जितनी वर्तमान में प्राप्त हो रही है उससे कई अधिक हों। तात्पर्य है कि स्मृतियाँ हमारे सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, पारिवारिक, आदि सभी भावों का मार्ग प्रशस्त करने वाले ग्रन्थ हैं। भारतीय जनमानस का जीवन इन्हीं स्मृतियों के अनुसार प्रवृत्त होता है।